XX प्रातःक्लास 29-3-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। अपन को आत्मा समझ परमपितापरमात्मा साथ योग लगाने से उनको योगी कहा जाता है। वह है सच्चा योगी। क्योंकि बाप सच्च है ना। तुम्हार बुधि का योग सच्च के साथ है। वह जो कुछ समझाते हैं सत्य ही समझाते हैं। योगी और भोगी है ना। भोगी भी अनेक प्रकार के होते हैं, योगी भी अनेक प्रकार के होते हैं। तुम्हारा योग तो एक ही प्रकार का है। उन्हों का समय ही अलग है। तुम्हारा समय भी अलग है। तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग के योगी। और किसी को भी इस संगम युग का पता नहीं है। पावन योगी है या पतित-भोगी हैं यह भी बच्चे जानते हैं। बाबा तो सभी को बच्चे ही कहते रहते हैं। क्योंकि समझते हैं हम सभी बेहद के आत्माओं का बाप हूं। यह तो समझ की बात है ना। तुम भी समझते हो हम सभी आत्मायें भाई2 हैं। वह हमारा बाप है। फिर तुम बाप के साथ योग लगाने से पवित्र बनते हो। वह हैं भोगी। तुम हो योगी। तुम बाप को जानते हो। बाप अपना परिचय देते हैं। यह भी तुम समझते हो यह पुरुषोत्तम संगम युग है। यह तुम्हारे सिवाय और कोई को पता नहीं हैं। इनका नाम ही है पुरुषोत्तम संगम युग। इसलिए पुरुषोत्तम अक्षर कभी भी भूलना न चाहिए। पुरुषोत्तम बनने का है। पुरुषोत्तम कहा जाता है ऊंच पवित्र मनुष्य को। ऊंच और पवित्र यह ल०ना० ही थे। अभी टाईम का भी पता तुमको पड़ा है। हर 5000 वर्ष बाद दुनिया पुरानी होती है। फिर उनको नया बनाने बाप आते हैं। अभी हम संगम युगी ब्राह्मण कुल के हैं। ऊंच ते ऊंच है ब्रहमा। ब्रहमा को शरीरधारी दिखलाते हैं। शिव बाबा तो अशरीरी है। बच्चे समझ गये हैं अशरीरी और शारीरिक दोनो का मेल है। उनको तुम कहते हो बाबा। यह वन्डरफुल रथ है ना। इनका गायन भी है। मंदिर भी बनाते हैं। कोई किस रीती कोई किस रीति रथ को श्रृंगारते हैं। यह भी बाप ने बताया है बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में मैं प्रवेश करता हूं। कितना क्लीयर समझाते हैं। पहले2 तो भगवानुवाच कहना पड़े। भगवानुवाच मैं बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त के जन्म में ... यह तो तुम बच्चों ने ही समझा है। और कोई कब समझा न सके। तुम बच्चे भी कब2 भूल जाते हो। पुरुषोत्तम संगम युग यह अक्षर बहुत जरूरी है। यह भी लिटरेचर आद में लिखना भूल जाते हैं। पुरुषोत्तम अक्षर लिखने से समझेंगे यह पुरुषोत्तम संगम युग ही कल्याणकारी युग है। युग याद है तोभी समझेंगे हम नई दुनिया के लिए बदल रहे हैं। नई दुनिया में होते ही हैं देवी-देवतायें। अभी हम संगम युग पर है। भगवान का अभी तुमको पता पड़ा है। संगम युग को कब भूलो मत। भूलने से सारा ज्ञान ही भूल जाता है। तुम जानते हो अभी हम बदल रहे हैं। यह दुनिया भी बदल रही है। पुरानी दुनिया बदल नई होती है। बाप कैसे इस दुनिया को भी बदलते हैं, बच्चों को भी बदलते हैं। बच्चे2 तो सभी को कहेंगे ना। सारी दुनिया के जो भी आत्मायें हैं सभी का बाप है। सभी का पार्ट इस ड्रामा में है। चक्र भी सिध करना है। हरेक अपना2 धर्म स्थापन करते हैं। यह देवी-देवताधर्म सिवाय बाप के और कोई स्थापन कर न सके। यह धर्म कोई ब्रहमा नहीं स्थापन करते हैं। नई दुनिया में देवी देवता धर्म। यह पुरानी दुनिया में मनुष्य ही मनुष्य हैं। नई दुनिया में देवी देतवायें होते हैं। देवतायें पवित्र रहते हैं। वहां रावण राज्य नहीं होता। बाप तुम बच्चों को रावण पर जीत पहनाते हैं। खुद नहीं पहनते। बच्चों को ही विजय पहनाते हैं। रावण पर विजय पहनाने से रामराज्य हो हो जाता है। राम राज्य नई दुनिया को, रावणराज्य पुरानी दुनिया को कहा जाता है। पुरानी दु० और नई दुनिया को तुम बच्चे ही जानते हो। रामराज्य कैसे स्थापन होता है यह तुम बच्चों के सिवाय और कोई जानते ही नहीं। रचयिता बाप बैठ बच्चों को रचना का राज़ समझाते हैं। बाप है रचयिता बीज रूप। बीज को कहा जाता है वृक्षपति। अभी वह तो जड़ बीज है उनको तो ऐसे नहीं समझेंगे। अभी तुम समझते हो बीज जैसे वृक्ष का पति होता है। बीज से ही सारा झाड़ निकलता है। वह है जड़। यह तो फिर है चैतन्य। सत-चित आनन्द स्वरूप। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप चैतन्य है। फिर उनकी महिमा की जाती है। चैतन्य है इसलिए उन में सारा ज्ञान है। मनुष्य सृष्टि रूपी बड़ा झाड़ है। सारी विश्व का कितना बड़ा झाड़ है। कितनी

कितनी बड़ी विश्व है। माडल कितना छोटा बनाया जाता है। यह तो कितना बड़ा बेहद का झाड़ है। मनुष्य सृष्टि का। सभी से बड़ा है। ऊंच ते ऊंच है, बाप नालेज-फुल। उन झाड़ों की नालेज तो बहुतों को होती है। इसकी नालेज एक बाप ही देते हैं। अभी तुम्हारी बुधि है बेहद में। बाप ने हद की बुधि को बदल कर बेहद की बुधि दी है। तुम इस सारे वृक्ष को जान गये हो। कितना बड़ा पोलार इस झाड़ को मिला हुआ है। बाप तुम बच्चों को बेहद में ले जाते हैं। यह सारी दुनिया ही पतित है। एक दो कोस अर्थात हिंसा करने वाले हैं। सारी सृष्टि ही हिंसक है। अभी तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला हुआ है। अहिंसक सिर्फ एक ही धर्म होता है नई दुनिया में। उनको ही राम-राज्य कहा जाता है। पहले2 नया झाड़ बहुत छोटा होता है। एक धर्म ही होता है। पहले थुर में एक धर्म है। फिर फाउन्टेन तीन टयुब्स निकलते हैं। ऐसे जैसे। यह फाउन्डेशन है, आदी सनातन देवी-देवता धर्मका। फिर उन से तीन टयुब्स निकलते हैं। थुर फिर डास्टारियां छोटे कितने निकलते हैं। अभी तो इस झाड़ का थुर ही नहीं है। और कोई झाड़ ऐसा होता नहीं। इनका मिशाल भी बड़ के झाड़ से एक्युरेट है। बड़ का झाड़ बिगर थुर बाकी सारा खड़ा है। थुर है नहीं। सुजाता भी नहीं है। सारा झाड़ हरा-भरा है। यह भी कितना बड़ा झाड़ है। बाकी देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। थुर तो यह है ना। रामराज्य अर्थात देवी-देवता इस थुर में ही आ जाता है। बाप ने समझाया है हम कैसे तीन धर्म स्थापन करते हैं। यह बातें तुम ब्रह्मा संगम युगी ब्राहमण ही समझते हो। तुम ब्राहमणों का यह है छोटा सा कुल। छोटे2 मठ-पंथ कितने निकलते हैं। अरविन्दो आश्रम है, कितना जल्दी2 बुधि को पाते हैं। क्योंकि उन में विकार के लिए कोई मना नहीं करते हैं। यहां तो बाप कहते हैं काम महाशत्रु है उन पर विजय पानी है। ऐसे और कोई कह न सके। नहीं तो उन्हों के पास भी हंगामा हो जाये। यहां तो हैं ही पतित मनुष्य। तो पावन बनने की बात सुनते ही नहीं। कहते हैं विकार बिगर बच्चे कैसे पैदा होंगे। इन विचारों का भी होष नहीं है। गीता पाठी कहते हैं भगवानुवाच काम महाशत्रु है उनको जीतने से जगत-जीत बनेंगे। परन्तु समझते नहीं हैं। वह जब यह अक्षर सुनाते हैं तो उनको पकड़ना चाहिए। इसलिए बाबा कहते हैं जैसे हनुमान दर पर जूतों में जाकर बैठता था। बाबा भी कहते हैं जाकर किनारे बैठ कर सुन कर आओ। फिर जब यह अक्षर सुनावे तो पूछना चाहिए इनका रहस्य क्या है। जगत-जीत तो यह देवतायें थे। देवता बनने लिए तो इन विकारों को छोड़ना पड़े। यह भी तुमको कह सकते हो। तुम जानते हो अभी रामराज्य की स्थापना हो रही है। महावीर तो तुम हो। इसमें डरने की भी बात नहीं। कोई पत्थर नहीं मारेंगे। बहुत ही प्यार से पूछना चाहिए स्वामी जी आप ने सुनाया काम महाशत्रु है इन पर जीत पाने से जगतजीत विश्व का मालिक बनेंगे। फिर आप तो यह बताते नहीं कि पवित्र कैसे बनो। अभी तुम बच्चे पवित्रता में रहने वाले महावीर हो। महावीर ही विजय माला में पिरोये जाते हैं। बाकी वह लोग तो तो जो सुनाते हैं वह हेरांग बातें। ऐसे रांग बात सुनने मनुष्यों के कान हिरे हुये हैं। तुमको तो अभी रांग बातें सुननी पसन्त नहीं आती है। राईदस बातें तुम्हारे कानों को अच्छी लगती है। हियर नो ईविल। मनुष्यों को सुजाग जस करना है। भगवान कहते हैं पवित्र बनो। सतयुग में पवित्र देवतायें थे। इस समय मनुष्य पतित हैं। इसलिए असुर कहा जाता है। ऐसे2 प्रेम से बैठ समझाना चाहिए। बोलो हमारे पास भी सतसंग होता है। इसमें भी समझाया जाता है काम महाशत्रु है। अभी पवित्र बनने चाहते हो तो इस युक्ति से बनो। महावीर के लिए त्रि दिखाया है रावण। भी उनको हिलाये न सकें। उनका अर्थ भी कोई नहीं समझते हैं। रामायण मनुष्य कितना पढ़ते हैं। इन में तो बहुत ग्लानी है। राम की स्त्री सीता चुराई गई। और कृष्ण के लिए कहते हैं खुद रानियों को चुराया था। यह सभी ग्लानी की बातें हैं ना। बाप समझाते हैं कितनी ग्लानी की है। तब ही कहते हैं यदा2 ... भारत का ही नाम आता है। बाप आते भी भारत में है। यह भारत बहुत भरत खण्ड था। अभी भरत खण्ड न होने कारण हिन्दुस्तान नाम रख दिया है। नहीं तो भारतहर बात भरपूर था। धन-दौलत, पवित्रता, सुख-शान्ति

सभी से भरपूर था। अभी है दुःखों से भरपूर। इसलिए पुकारते हैं हे दुःख-हर्ता, सुख कर्ता ... , तुम भी कितना खुशी से बाप से पढ़ते हो। ऐसा कौन होगा जो बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा न लेंगे। पहले2 तो अल्फ समझना है। अल्फ नहीं समझने से कुछ भी रहस्य बुधि में नहीं आवेगा। बेहद का बाप जो बेहद का वर्सा देते हैं पहले तो उनको जानना चाहिए। बाप का निश्चय बैठ तब ही आगे बढ़ना चाहिए। बच्चों को बाप से कुछ भी प्रश्न पूछने की दरकार नहीं है। बाप पतित-पावन है उनको याद करो। बस। याद से ही तुम पावन बन जावेंगे। मुझे बुलाया ही है इसलिए। जीवनमुक्ति है भी सैकण्ड की। फिर भी याद की यात्रा समय ले लेती है। मुख्य बात ही यह है। याद की यात्रा में ही विघ्न पड़ती है। आधा कल्प देह अभिमानी रहे हैं तो अभी एक जन्म में देही-अभिमानी बनने में मेहनत है। इनके लिए तो सहज है। तुम बुलाते भी हो बाप-दादा। यह भी समझाते हैं बाप की सवारी हमारे सिर पर है। तो भी सदैव याद नहीं रहती। समझता भी हूं मैं उनका रथ हूं। शिव बाबा इस रथ पर है ही। बहुत नज़दीक है। फिर भी बाबा कहते हैं तुम बाबा से जास्ती चार्ट रख सकते हो। इनको जास्ती याद क्यों नहीं पड़े। यह खुद कहते हैं मेरे सिर पर तो है ही। इकट्ठे हैं। तो भी यह आ जाता है मैं ही बैठ समझाता हूं। मैं ही बेहद में टिक जाता हूं। कोई कोई समय मैं खुद ही समझता हूं मैं मालिक हूं। मैं मैं हूं। बैटरियों को चार्ज करता हूं। सभी आत्माओं को सर्चलाईट देता हूं यह तो बहुत सहज है। मैं खुद बड़ी मिशन हूं। है तो बाबा परन्तु मैं अपन को समझ लेता हूं। मैं सभी आत्माओं को सर्चलाईट देता हूं। रेजस देता हूं। सभी आत्माओं को सर्चलाईट का बल देना है ना। तो अपन को भी ऐसा समझ लेता हूं। इस होते भी बाबा फिर कह देते हैं तुम बाप के साथ योग में रहने का पुरुषार्थ करते हो और मैं घड़ी मालिक बन जाता हूं। तो कोई कायदे अनुसार पुरुषार्थ थोड़े ही हुआ। मैं याद कहां करता हूं सर्चलाईट देता हूं। सारी दुनिया के आत्मा को याद करता हूं। यह भी अच्छा है। बाकी यथार्थ विधि से अपन को आत्मा समझ कर बैटरी समान योग नहीं रख सकता हूं घड़ी वह बन जाता हूं। स्क्युरेट राईट तो नहीं है। तुम सभी कुछ भूल कर एक बाप को याद करते हो। और यह फिर सभीकुछ भूल अपन को ही समझ खड़ा हो जाता हूं। संग का रंग कहा जाता है ना। तो बाबा के संग का रंग इन पर भी चढ़ जाता है। कहते हैं मैं भी उनके संग के रंग में रंग जाता हूं। यह सब विचार सागर मथन कर तुम बच्चों को समझाते हैं। सारी दुनिया के आत्माओं को सर्चलाईट देता हूं। ताकत देता हूं। ऐसा हो जाता है। बैटरी होकर तो बैटना ही है। तुमको भी सम्पूर्ण बैटरी बनना है। तभी बाबा ने उस दिन भी कहा था मैं भी जैसे बाप बन जाता हूं। बाबा को इसमें भी खुशी होती है। बैटरी का काम करता हूं। गुरु से मैं भी सीख जाता हूं। बाबा को मज़ा आता है। उस याद की यात्रा में तो विघ्न पड़ती है। इसमें विघ्न नहीं पड़ती है। यह बहुत सहज होता है। उनके संग में बैठा हूं तो खुशी होती है। जो भी आत्मायें हैं सभी को बैटरी होकर रेजस देता हूं। तुम बड़ी बैटरी के साथ योग लगाते हो। मैं उनके साथ होने से उनके संग के रंग में रंग जाता हूं। कायदे सिर नहीं। बाप कहते हैं मुझे याद करो। मैं फिर बैटरी बन जाता हूं फिर भी दुनिया को तो भूल जाता हूं ना। देखते हुये कुछ भी देखने में नहीं आता है। बाप के लिए तो दुनिया है ही नहीं। तब तो बैटरी कहा जाता है। तो बाबा को मज़ा आता है। साथ में है तो संग का रंग लग जाता है। फिर तो कोशिश करता हूं बाबा को याद करने की। बहुत उनकी महिमा करता हूं। बहुत प्यार करता हूं। बाबा आप कितने मीठे हो। हमको कल्प2 कितना सिखलाते हो। फिर आधा कल्प हम आप को याद भी नहीं करेंगे। अभी तो बहुत याद करता हूं। कल हमारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था। जिसकी पूजा करते थे हमको थोड़े ही पता था हम यह बन जावेंगे। अभी बन्दर लगता है। योगी बनने से फिर भी देवी-देवता बन जावेंगे। मैं यह सभी बच्चे हैं। बहुत ही प्यार से सम्भालते हैं। पालना करते हैं। यह भी हमारे समान नर से नारायण बन जावे। यहां आये ही इसलिए हैं। कितना समझाता हूं बाप को याद करो। दैवी गुण धारण करो। खान-पान की सम्भाल रखो। नहीं करते

है तो समझाता हूं अजन समय पड़ा है। कुछ न कुछ भूलें होती रहती है। छोटी बड़ी। प्यार से समझाता हूं भूलें न करो। किसको दुःख न दो। भूल करते हो तो गोया दुःख देते हो। बाप तो कब दुःख नहीं देते हैं। वह तो डायरेक्शन ही देते हैं। मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश हो। बहुत मीठा बन जावेंगे। ऐसा (ल०ना०) मीठा बनना है। दैवीगुण धारण करनी है। पवित्र बनो। अपवित्र को आने का हुकुम नहीं है। कब कब आने देते हैं। वह भी अभी। जब इस तरफ बहुत वृधि हो जावेगा तो फिर कह देंगे यह है टावर आफ प्युरिटी। टावर आफ सायलेन्स। ऊंच ते ऊंच है। बाकी दुनिया में तो सभी है झूठ। अपन को आत्मा समझ बाप की याद में रहना है। यह है ही हाईस्ट पावर। वहां बड़ी सायलेन्स रहती है। आधा कल्प कोई झगड़ा आद नहीं होता। यहां तो कितना झगड़ा आदि है। शान्ति हो न सके। शान्ति का धाम है मूलवतन। फिर शरीर धारण कर विश्व में पार्ट बजाने आते हैं। तो वहां भी शान्ति रहती है। आत्मा का स्वधर्म है ही शान्त। अशान्ति कराती है रावण। तुम शान्ति की शिक्षा पाते रहते हो। कोई गुस्से में होते हैं तो अशान्ति कर देते हैं। इस योग बल से तुम्हारे सभी किचड़ा निकल जाता है। याद से कचड़ा भस्म हो जाता है। कट निकल जाती है। बाप कहते हैं कल तो तुमको शिक्षा दी थी क्या तुम भूल गये हो। 5000 वर्ष की बात है। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। 99% झूठ। इसलिए कहा ही जाता है झूठी माया झूठी काया ·· नई दुनिया में झूठ का नाम नहीं होता। अभी तुमको झूठ और सच्च का फर्क पड़ता है। तुमको बाप ही आकर बतलाते हैं क्या सच्च है क्या झूठ है। ज्ञान क्या है भक्ति क्या है। भ्रष्टाचारी किसको, श्रेष्ठाचारी किसको कहा जाता है। भ्रष्टाचारी विकार से पैदा होते हैं। वहां विकार होता ही नहीं। तुम खुद कहते हो सम्पूर्ण निर्विकारी है। रावण राज्य ही नहीं। यह तो सहज समझाने की बातें हैं। फिर क्या करना चाहिए। और पवित्र जरूर बनना ही है। वैश्यालय में वैश्या न बनना चाहिए। वैश्यालय में विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। इसलिए बाबा पर भी छपवाया है। कलियुगी विकारी है। या सतयुगी निर्विकारी हो। पर तुम बन्दर इन बातों को भी समझते थोड़े ही हैं। कोटों में कोई ही निकलेगा। इस कुल होगा तो उनको जंचेगा। खयाल में आवेगा जाकर उनका अर्थ समझूं। थोड़ा टच होगा। लिखत तो राईट है। वशेवर विकारी तो सारी दुनिया ही है। दूसरी बात म्युज़ियम में तो बहुत मनुष्य आते हैं तो बहुतों को देख मनुष्य समझते हैं यहां जरूर कुछ है। बड़ी संस्था है। ऐसे चित्र आद तो कोई निकाल न सके। किसकी बुधि में बैठ न सके। विराट रूप का चित्र कितना अच्छा है। मनुष्य पुनर्जन्म तो जरूर लेते हैं। वह कहते हैं 84 लाख जन्म। हम कहते हैं 84 जन्म। कोई तो पुनर्जन्म को ही नहीं मानते हैं। ईश्वर पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। यह तो हम भी कहते हैं अच्छा।

देखो यह मनोहर बेटी कितनी सर्विस करती है। सर्विस के लिए जैसे हैरान रहती है। चारो तरफ भागती रहती है। ऐसे को ही सर्विस एबुल कहा जाता है। शिव बाबा और यह बाबा भी कहते हैं ऐसे सर्विस एबुल बच्चे मुझे बहुत प्यारे लगते हैं। सर्विस नहीं करते हैं तो जरूर डिस-सर्विस में ही समय बंवाते होंगे। सर्विस का बड़ा शौक होना चाहिए। किसका कल्याण करने रास्ता बताना चाहिए। बाबा जानते हैं इनको सर्विस की बिगर सुख नहीं आता। बाप का अन्दर का भी प्यार रहता है। अन्दर की प्यार की और बाहर की प्यार बाबा पास बुद्धि बहुत युक्ति है। अच्छी सर्विस करने वाले पर तो कुर्बान जाती है।

प्रदर्शनी में तुम कितना समझाते हो। बड़े2 आफिसर्स आते हैं उस समय कहेंगे यह बहुत अच्छा नालेज है। सभी को मिलनी चाहिए खुद नहीं लेंगे। फिर भी हर्जा नहीं है। जब भीड़ पड़ेंगे इतफाक होगा तो याद आवेगा। मशानी में जाने समय वैराग्य आता है ना। तुम्हारे लिए वैराग्य की बात नहीं। तुम तो कहते हैं हम पढ़ते हैं जिससे ऊंच पद मिलता है। ड्रामा अनुसार। सतयुग में तो तुमको बहुत सुख है। वहां ऐसी कोई बात नहीं होती। तो तुम एवर हेल्दी बनते हो। अभी तुमको ज्ञान मिला है।

-: : ओमशान्ति : :- *-: : शिव बाबा याद है? : :-*